बनाव और बिगाड़

मौलाना सैयद अबुल-आला मौदूदी (रह०)
अनुवाद
नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(शुरू ईश्वर के नाम से जो अत्यन्त दयावान बड़ा कृपाशील है।)

दो शब्द

यह किताब वास्तव में एक भाषण है जो 10 मई 1947 ई॰ को दारुल-इस्लाम, पठान कोट के निकट पूर्वी पंजाब की जनसभा में दिया गया था। श्रोताओं में मुसलमानों के अलावा हिन्दू और सिख भाई भी शामिल थे। पृष्ठभूमि में इस तथ्य को भी सामने रखा जाए कि यह वह ज़माना था जब सारा पूर्वी पंजाब एक ज्वालामुखी के पहाड़ की तरह फटने के लिए तैयार था और तीन ही महीने बाद वहाँ फ़साद और दंगों की वह आग भड़कनेवाली थी जिसकी तबाहकारियाँ अब इनसानी इतिहास का एक अत्यन्त दर्दनाक अध्याय बन चुकी हैं।

इस किताब में देश को बचाने और विकास के मार्ग पर लाने के लिए जो बातें बताई गई हैं, उनकी प्रासंगिकता आज भी है। हमारा देश आज जिन समस्याओं में ग्रस्त है वे सबके सामने हैं। इस किताब को पढ़कर देशवासियों, उसके शासक वर्गों और देश के शुभचिन्तकों को अवश्य मार्गदर्शन प्राप्त होगा और वे अपने प्यारे देश भारत को तबाही और विनाश से बचाने का अवश्य प्रयास करेंगे। ऐसी हमें आशा है।

पाठकों से अनुरोध है कि इस किताब को अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुँचाने की कोशिश करें। ईश्वर हमारी सहायता और मार्गदर्शन करे। हमारी उससे यही प्रार्थना है!!

—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही

सिक्रेट्री, इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (दिल्ली)

बनाव और बिगाड़

शुक्र और प्रशंसा उस ईश्वर के लिए है जिसने हमें पैदा किया, अक़्ल और समझ-बूझ प्रदान की, बुरे और भले के बीच अन्तर करना सिखाया और हमारी रहनुमाई और मार्गदर्शन के लिए अपने बेहतरीन बन्दों को भेजा। और सलाम और शान्ति हो ईश्वर के उन नेक और सदाचारी बन्दों पर जिन्होंने इनसानों को इनसानियत की शिक्षा दी, अच्छे लोगों की तरह रहना सिखाया, इनसानी ज़िन्दगी के अस्ल उद्देश्य से अवगत कराया और वह उसूल उनको बताए जिनपर चलकर वे दुनिया में सुख और आख़िरत (परलोक) में मुक्ति पा सकते हैं।

ईश्वर का अटल नियम

भाइयो और बहनो! यह दुनिया जिस ख़ुदा (ईश्वर) ने बनाई है और जिसने इस ज़मीन का फ़र्श बिछाकर इसपर इनसानों को बसाया है वह कोई बे-सोचे-समझे और अलल-टप काम करनेवाला ख़ुदा नहीं है। वह चौपट-राजा नहीं है कि उसकी नगरी अंधेर नगरी हो। वह अपने अटल नियम, मज़बूत उसूल और क़ायदे रखता है, जिनके अनुसार वह सारी दुनिया पर शासन कर रहा है। उसके क़ानून से जिस तरह सूरज, चाँद, ज़मीन और तारे बंधे हुए हैं, जिस तरह हवा, पानी, पेड़ और जानवर बंधे हुए हैं उसी तरह हम-आप

सब इनसान भी बंधे हुए हैं। उसका क़ानून जिस तरह हमारे जन्म और मौत पर, हमारे बचपन और जवानी और बुढ़ापे पर, हमारे सांस के आने-जाने पर, हमारे हाज़मे और ख़ून की गर्दिश पर और हमारी बीमारी और तन्दुरुस्ती पर बेलाग और अटल तरीक़े से चल रह है, ठीक उसी तरह उसका एक और क़ानून भी है जो हमारे इतिहास के उतार-चढ़ाव पर, हमारे गिरने और उठने पर, हमारी उन्नति और पतन पर और हमारी निजी, जातीय और राष्ट्रीय उन्नति एवं अवनति पर शासन कर रहा है। यह क़ानून भी उतना ही बेलाग और अटल है। अगर यह मुमकिन नहीं है कि आदमी नाक से सांस लेने के बजाय आँखों से सांस लेने लगे और मेदे में खाना हज़म करने के बजाय दिल में हज़म करने लगे तो यह भी मुमकिन नहीं है कि ईश्वर के क़ानून के अनुसार जिस राह पर चलकर किसी जाति को नीचे जाना चाहिए वह उसे ऊँचाई पर ले जाए। अगर आग एक के लिए गर्म और दूसरे के लिए ठण्डी नहीं है तो बुरे करतूत भी, जो ईश्वर के क़ानून के अनुसार बुरे हैं, एक को गिरानेवाले और दूसरे को उठानेवाले नहीं हो सकते। जो उसूल और नियम भी ईश्वर ने इनसान की भली और बुरी तक़दीर (भाग्य) बनाने के लिए तय किए हैं वे न किसी के बदले बदल सकते हैं, न किसी के टाले टल सकते हैं, और न उनमें किसी के साथ दुश्मनी और किसी के साथ रिआयत ही पाई जाती है।

ईश्वरीय क़ानून की अहम धारा

ईश्वर के इस क़ानून की पहली और सबसे अहम व महत्वपूर्ण धारा यह है—

“वह बनाव को पसन्द करता है और बिगाड़ को पसन्द नहीं करता।”

मालिक होने की हैसियत से वह चाहता है कि उसकी दुनिया का प्रबन्ध और इन्तिज़ाम ठीक किया जाए। उसको ज़्यादा-से-ज़्यादा संवारा जाए। उसके दिए हुए संसाधनों और उसकी दी हुई क़ुव्वतों और योग्यताओं को ज़्यादा-से-ज़्यादा बेहतर तरीक़े से इस्तेमाल किया जाए। वह इस बात को हरगिज़ पसन्द नहीं करता—और उससे यह उम्मीद की भी नहीं जा सकती कि वह कभी उसे पसन्द करेगा—कि उसकी दुनिया बिगाड़ी जाए, उजाड़ी जाए और उसको दुर्व्यवस्था से, गन्दगियों से और ज़ुल्म व अत्याचार से ख़राब कर डाला जाए। इनसानों में से जो लोग भी दुनिया के प्रबन्ध के उम्मीदवार बनकर खड़े होते हैं उनमें से सिर्फ़ वे लोग ईश्वर की निगाह में चुने जाने के हक़दार ठहरते हैं जिनके अन्दर बनाने की ज़्यादा-से-ज़्यादा सलाहियत और क्षमता होती है। उन्हीं के हाथों में ईश्वर यहाँ प्रबन्ध करने के अधिकार देता है।

फिर ईश्वर देखता रहता है कि ये लोग बनाते कितना हैं और बिगाड़ते कितना हैं। जब तक उनका बनाव उनके बिगाड़ने से अधिक होता है और कोई दूसरा उम्मीदवार उनसे अच्छा बनानेवाला और उनसे कम बिगाड़नेवाला मैदान में मौजूद नहीं होता, उस वक़्त तक उनकी सारी बुराइयों और उनके तमाम दोषों और कोताहियों के बावजूद दुनिया का प्रबन्ध उन्हीं के हवाले रहता है। मगर जब वे कम बनाने और अधिक बिगाड़ने लगते हैं तो ईश्वर उन्हें हटाकर फेंक देता है और दूसरे उम्मीदवारों को उसी लाज़िमी शर्त पर प्रबन्ध सौंप देता है।

फ़ितरी क़ानून : एक मिसाल

यह क़ानून बिलकुल एक फ़ितरी क़ानून है और आपकी अक़्ल गवाही देगी कि इसको ऐसा ही होना चाहिए। अगर आप में से किसी व्यक्ति का कोई बाग़ हो और वह उसे एक माली के हवाले करे तो आप ख़ुद बताइए कि वह उस माली से सबसे पहली बात क्या चाहेगा? बाग़ का मालिक अपने माली से इसके सिवा और क्या चाह सकता है कि वह उसके बाग़ को बनाए, न कि ख़राब करके रख दे। वह तो लाज़िमी तौर पर यही चाहेगा कि उसके बाग़ को अधिक-से-अधिक बेहतर स्थिति में रखा जाए। उसमें अधिक-से-अधिक विकास किया जाए। उसकी सुन्दरता और ख़ूबसूरती में, उसकी सफ़ाई में, उसकी पैदावार में अधिक-से-अधिक बढ़ोत्तरी हो। जिस माली को वह देखेगा कि वह ख़ूब मेहनत से जी लगाकर अच्छी तरह से और क़ाबिलियत के साथ उसके बाग़ की सेवा कर रहा है, उसकी क्यारियों को सँवार रहा है, उसके अच्छे पेड़ों की देखभाल कर रहा है, उसको बुरी नस्ल के पेड़ों और झाड़-झँकार से साफ़ कर रहा है, और उसमें अपनी मेहनत और लगन से अच्छे फलों और फूलों की नई-नई क़िस्मों की बढ़ोत्तरी कर रहा है, तो लाज़िमी है कि वह उससे ख़ुश हो, उसे तरक़्क़ी दे और ऐसे लाइक़, ज़िम्मेदारी को पहचाननेवाले और ख़िदमत-गुज़ार (सेवा-भाव रखनेवाले) माली को निकालना कभी पसन्द न करे। लेकिन इसके विपरीत अगर वह देखे कि माली नालाइक़ भी है, काम चोर भी है, और जान-बूझकर या बेजाने-बूझे उस बाग़ के साथ बुरा सुलूक भी कर रहा है, सारा बाग़ गन्दगियों से अटा पड़ा है, क्यारियाँ टूट-फूट रही हैं, पानी कहीं बिना ज़रूरत

बह रहा है, और कहीं बड़े भूभाग सूखते चले जा रहे हैं, घास, फूंस और झाड़-झँकार बढ़ते चले जाते हैं और फूलों और फलदार पेड़ों को बेदर्दी के साथ काट-काटकर और तोड़-तोड़कर फेंका जा रहा है, अच्छे पेड़ मुरझा रहे हैं और कांटोंवाली झाड़ियाँ बढ़ रही हैं, तो आप खुद ही सोचिए कि बाग़ का मालिक ऐसे माली को कैसे पसन्द कर सकता है। कौन-सी सिफ़ारिश, कौन-सी दरख़ास्त और कौन-सी अपीलें और कौन-से बाप-दादा के अधिकार या दूसरे खुद से बनाए हुए हक़ व अधिकारों का लिहाज़ उसको अपना बाग़ ऐसे माली के हवाले किए रहने पर आमादा कर सकता है? अधिक-से-अधिक रिआयत बाग़ का स्वामी बस इतनी ही तो करेगा कि उसे चेतावनी दे करके फिर एक मौक़ा दे दे। मगर जो माली चेतावनी पर भी होश में न आए और बाग़ को उजाड़े ही चला जाए, उसका इलाज इसके सिवा और क्या है कि बाग़ का मालिक कान पकड़कर उसे निकाल-बाहर करे और दूसरा माली उसकी जगह रख ले।

तनिक सोचिए!

अब विचार कीजिए कि अपने एक ज़रा से बाग़ के प्रबन्ध में जब आप यह तरीक़ा चुनते हैं तो ईश्वर, जिसने अपनी इतनी बड़ी ज़मीन इतने साज़ो-सामान और साधनों-संसाधनों के साथ इनसानों के हवाले की है और इतने विस्तृत अधिकार उनको अपनी दुनिया और उसकी चीज़ों पर दिए हैं, वह आख़िर इस की उपेक्षा कैसे कर सकता है कि आप उसकी दुनिया बना रहे हैं या उजाड़ रहे हैं। आप बना रहे हों तो कोई वजह नहीं है कि वह आपको बिला वजह हटा दे, लेकिन अगर आप बनाएँ कुछ नहीं और उसके इस शानदार

बाग़ को बिगाड़ते और उजाड़ते ही चले जाएँ तो आपने अपने दावे अपनी जानकारी में चाहे कैसी ही ज़बरदस्त मनमानी बुनियादों पर क़ायम कर रखे हों वह अपने बाग़ पर आपके किसी अधिकार को स्वीकार नहीं करेगा। कुछ चेतावनी दे करके, सम्भलने के दो-चार अवसर देकर, आख़िरकार वह आपको बाग़ के प्रबन्ध से बाहर करके ही छोड़ेगा।

ईश्वर का दृष्टिकोण

इस मामले में ईश्वर का दृष्टिकोण इनसानों के दृष्टिकोण से उसी तरह भिन्न है जिस तरह खुद इनसानों में एक बाग़ के मालिक का दृष्टिकोण उसके माली के दृष्टिकोण से भिन्न और जुदा हुआ करता है। मान लीजिए कि मालियों का एक ख़ानदान दो-चार पुश्त से एक व्यक्ति के बाग़ में काम करता चला आ रहा है। उनका कोई दादा या परदादा अपनी योग्यता की बिना पर यहाँ रखा गया था। फिर उसकी औलाद ने भी काम अच्छा किया। मालिक ने सोचा कि बिला वजह उन्हें हटाने और नए आदमी रखने की क्या ज़रूरत है। जब काम ये भी अच्छा ही कर रहे हैं तो इनका अधिकार दूसरे से ज़्यादा है। इस तरह यह ख़ानदान बाग़ में जम गया। लेकिन अब इस ख़ानदान के लोग निहायत नालाइक़, बेसलीक़ा, कामचोर और ज़िम्मेदारियों को न जाननेवाले हो गए हैं। बाग़वानी (खेती) की कोई सलाहियत उनके अन्दर नहीं है। सारे बाग़ का सत्यानाश किए डालते हैं। और इसपर उनका दावा यह है कि हम बाप-दादा के समय से इस बाग़ में रहते चले आते हैं, हमारे परदादा ही के हाथों शुरू-शुरू में यह बाग़ आबाद हुआ था, इसलिए हमारे इसपर

पैदाइशी अधिकार हैं और अब किसी तरह यह जाइज़ नहीं है कि हमें बेदख़ल करके किसी दूसरे को यहाँ का माली बना दिया जाए। यह उन नालाइक़ मालियों का दृष्टिकोण है। मगर क्या बाग़ के मालिक का दृष्टिकोण भी यही हो सकता है? क्या वह यह नहीं कहेगा कि मेरे नज़दीक तो सबसे पहली चीज़ मेरे बाग़ की अच्छी तरह से देखभाल है। मैंने यह बाग़ तुम्हारे परदादा के लिए नहीं लगाया था, बल्कि तुम्हारे परदादा को इस बाग़ के लिए नौकर रखा था। तुम्हारे इसपर जो अधिकार भी हैं सेवा और क़ाबिलियत की शर्त के साथ हैं। बाग़ को बनाओगे तो तुम्हारे सभी अधिकारों का ध्यान रखा जाएगा। अपने पुराने मालियों से आख़िर मुझे क्या दुश्मनी हो सकती है कि वह काम अच्छा करें तब भी मैं उन्हें बिला वजह निकाल ही दूँ और नए उम्मीदवारों का बिला ज़रूरत तजरिबा करूँ। लेकिन अगर उस बाग़ को ही तुम बिगाड़ते और उजाड़ते रहे, जिसकी देखभाल की ख़ातिर तुम्हें रखा गया था तो फिर तुम्हारा कोई अधिकार मुझे स्वीकार नहीं है। दूसरे उम्मीदवार मौजूद हैं, बाग़ का प्रबन्ध मैं उनके हवाले कर दूँगा और तुमको उनके अधीन सेवक बनकर रहना होगा। इसपर भी अगर तुम दुरुस्त न हुए और साबित हुआ कि अधीन की हैसियत से भी तुम किसी काम के नहीं हो, बल्कि कुछ बिगाड़ने ही वाले हो, तो तुम्हें यहाँ से निकाल-बाहर किया जाएगा और तुम्हारी जगह सेवा-कार्य करनेवाले भी दूसरे ही लाकर बसाए जाएँगे।

यह अन्तर जो मालिक और मालियों के दृष्टिकोण में है, ठीक यही अन्तर दुनिया के मालिक और दुनियावालों के दृष्टिकोण में भी

है। दुनिया की विभिन्न जातियाँ ज़मीन के जिस-जिस हिस्से में बसती हैं, उनका दावा यही है कि यह क्षेत्र हमारा जातीय वतन है। पुश्तहा-पुश्त (नस्लों) से हम और हमारे बाप-दादा यहाँ रहते चले आ रहे हैं। इस देश पर हमारे पैदाइशी अधिकार हैं, इसलिए यहाँ इन्तिज़ाम और प्रबन्ध हमारा अपना ही होना चाहिए। किसी दूसरे को अधिकार नहीं पहुँचता कि बाहर से आकर यहाँ का प्रबन्ध और देखभाल करे। मगर ज़मीन के असली मालिक, ईश्वर का दृष्टिकोण यह नहीं है। उसने कभी इन जातीय हक़ व अधिकारों को स्वीकार नहीं किया है। वह नहीं मानता कि हर देश पर उसके नागरिकों का पैदाइशी अधिकार है, जिससे उनको किसी हाल में बेदख़ल नहीं किया जा सकता। ईश्वर तो यह देखता है कि कोई जाति अपने वतन में काम क्या कर रही है। अगर वह बनाव और संवार के काम करती हो, अगर वह अपनी शक्तियाँ ज़मीन के सुधार व विकास में इस्तेमाल करती हो, अगर वह बुराइयों की पैदावार रोकने और भलाइयों की खेती सींचने में लगी हुई हो, तो दुनिया का मालिक (जगदीश) कहता है कि बेशक तुम उसके अधिकारी हो कि यहाँ का प्रबन्ध तुम्हारे हाथ में रहने दिया जाए। तुम पहले से यहाँ आबाद भी हो और योग्य भी हो, इसलिए दूसरों के मुक़ाबले में तुम्हारा ही अधिकार सबसे पहले है। लेकिन मामला अगर इसके विपरीत हो, बनाव कुछ न हो और सब बिगाड़ ही के काम हुए जा रहे हों, भलाइयाँ कुछ न हों और बुराइयों ही से ईश्वर की ज़मीन भरी जा रही हो, जो कुछ ईश्वर ने ज़मीन पर पैदा किया है उसे बेदर्दी के साथ तबाह किया जा रहा हो और कोई बेहतर काम उससे लिया

ही न जाता हो, तो फिर ईश्वर की तरफ़ से पहले कुछ हल्की और कुछ सख़्त चोटें लगाई जाती हैं, ताकि ये लोग होश में आएँ और अपना रवैया ठीक कर लें। फिर जब वह जाति उसपर ठीक नहीं होती तो उसे देश के प्रबन्ध से बेदख़ल कर दिया जाता है और किसी दूसरी जाति को, जो कम-से-कम उसकी तुलना में ज़्यादा योग्य हो वहाँ की हुकूमत दे दी जाती है। और बात इसपर भी ख़त्म नहीं हो जाती। अगर अधीन बनने के बाद भी देश के नागरिक किसी योग्यता व क़ाबिलियत का सुबूत नहीं देते और अपने कार्य से यही दिखाते हैं कि उनसे कुछ भी बन न आएगा, बल्कि कुछ बिगड़ ही जाएगा, तो ईश्वर फिर ऐसी जाति को मिटा देता है और दूसरों को ले आता है, जो उसकी जगह बसते हैं। इस मामले में ईश्वर का दृष्टिकोण हमेशा वही होता है जो मालिक का होना चाहिए। वह अपनी ज़मीन के प्रबन्ध में दावेदारों और उम्मीदवारों के पैतृक या पैदाइशी अधिकार नहीं देखता। वह तो यह देखता है कि उनमें से कौन बनाव की अधिक-से-अधिक सलाहियत और बिगाड़ की तरफ़ कम-से-कम रुझान रखता है। एक युग के उम्मीदवारों में से जो इस पहलू से अधिक योग्य नज़र आते हैं, निर्वाचन उन्हीं का होता है और जब तक उनके बिगाड़ से उनका बनाव ज़्यादा रहता है, या जब तक उनके मुक़ाबले में ज़्यादा अच्छा बनानेवाला और कम बिगाड़नेवाला कोई मैदान में नहीं आ जाता, उस वक़्त तक प्रबन्ध उन्हीं के हाथ में रहता है।

इतिहास की गवाही

यह जो कुछ कहा जा रहा है, इतिहास गवाह है कि ईश्वर ने

हमेशा अपनी ज़मीन का प्रबन्ध इसी नियम पर किया है। दूर क्यों जाइए, ख़ुद अपने इसी देश का इतिहास देख लीजिए। यहाँ जो जातियाँ पहले आबाद थीं, उनकी बनाव व तामीर की क्षमताएँ और योग्यताएँ जब ख़त्म हो गईं तो ईश्वर ने आर्यों को यहाँ के प्रबन्ध का अवसर दिया, जो अपने समय की जातियों में सबसे ज़्यादा अच्छी क्षमताएँ और योग्यताएँ रखते थे। उन्होंने यहाँ आकर एक बड़ी शानदार सभ्यता की बुनियाद रखी, बहुत से ज्ञान-विज्ञान और कलाओं का आविष्कार किया, ज़मीन के ख़ज़ानों को निकाला और उन्हें बेहतरी और भलाइयों के कामों में इस्तेमाल किया, बिगाड़ से ज़्यादा बनाव के काम करके दिखाए।

यह योग्यताएँ और क्षमताएँ जब तक उनमें रहीं, इतिहास के सारे उतार और चढ़ाव के बावजूद वही इस देश के प्रबन्धक रहे। दूसरे उम्मीदवार बढ़-बढ़कर आगे आए, मगर ढकेल दिए गए, क्योंकि उनके होते दूसरे किसी प्रबन्धक की ज़रूरत न थी। उनके हमले ज़्यादा-से-ज़्यादा बस यह हैसियत रखते थे कि जब कभी यह ज़रा बिगड़ने लगे तो किसी को भेज दिया गया, ताकि उन्हें सचेत कर दे। मगर जब ये बिगड़ते ही चले गए और उन्होंने बनाव के काम कम और बिगाड़ने के काम ज़्यादा करने शुरू कर दिए, जब उन्होंने अख़लाक़ (नैतिकता व आचरण) में वह पस्ती अपनाई, जिसकी निशानियाँ वाममार्गी आन्दोलन और मत में आप अब भी देख सकते हैं, जब उन्होंने इनसानियत (वसुदेव कुटुम्बकम्) का बँटवारा करके ख़ुद अपनी ही सोसाइटी को वर्णों और ज़ातों में फाड़ डाला, अपने सामाजिक जीवन को एक श्रेणी के रूप में बनाया,

जिसकी हर सीढ़ी का बैठनेवाला अपने से ऊपर की सीढ़ीवाले का बन्दा और दास और नीचे की सीढ़ीवाले का ख़ुदा बन गया, जब उन्होंने ईश्वर के लाखों-करोड़ों बन्दों पर वह अत्याचार किया जो आज तक अछूतपन की शक्ल में मौजूद है, जब उन्होंने ज्ञान के दरवाज़े आम इनसानों पर बन्द कर दिए और उनके पण्डित ज्ञान-विज्ञान के ख़ज़ानों पर साँप बनकर बैठ गए, और जब उनके शासक वर्गों के पास अपने ज़बरदस्ती जमाए हुए अधिकार प्राप्त करने और दूसरों के परिश्रमों पर भोग-विलास करने के सिवा कोई काम न रहा तो ईश्वर ने आख़िरकार उनसे देश का प्रबन्ध छीन लिया और मध्य एशिया की उन जातियों को यहाँ काम करने का अवसर प्रदान किया जो उस समय इस्लाम के आन्दोलन से प्रभावित होकर जीवन की बेहतर क्षमताओं और योग्यताओं से सुसज्जित हो गई थी।

ये लोग सैंकड़ों वर्ष तक यहाँ के प्रबन्धक रहे और उनके साथ ख़ुद इस देश के भी बहुत से लोग इस्लाम क़बूल करके शामिल हो गए। इसमें शक नहीं कि उन लोगों ने बहुत कुछ बिगाड़ा भी, मगर जितना बिगाड़ा उससे ज़्यादा बनाया। कई सौ वर्ष तक भारत में बनाव का जो काम भी हुआ उन्हीं के हाथों हुआ या फिर उनके असर से हुआ। उन्होंने ज्ञान की रौशनी फैलाई, सोच-विचार का सुधार किया। सभ्यता व रहन-सहन को बहुत कुछ ठीक किया। देश के साधनों और संसाधनों को अपने समय की गुणवत्ता (मेआर) के अनुसार बेहतरी में इस्तेमाल किया और शान्ति व न्याय का वह बेहतरीन प्रबन्ध किया जो अगरचे इस्लाम की असली कसौटी और

मेआर से बहुत कम था, मगर पहले की स्थिति और आसपास के दूसरे देशों की स्थिति से तुलना में काफ़ी बुलन्द था। इसके बाद वे भी अपने पहले लोगों की तरह बिगड़ने लगे। उनके अन्दर भी बनाव की सलाहियतें घटनी शुरू हुईं और बिगाड़ के रुझान बढ़ते चले गए। उन्होंने भी ऊँच-नीच और नस्ली भेद-भाव और वर्गीय बँटवारा करके खुद अपनी सोसाइटी को फाड़ लिया, जिसके अनगिनत अख़लाक़ी (नैतिक), सियासी (राजनीतिक) और सांस्कृतिक नुक़सान हुए। उन्होंने भी न्याय कम और अत्याचार अधिक करना शुरू कर दिया। वे भी हुकूमत की ज़िम्मेदारियों को भूलकर केवल उसके फ़ायदों और अधिकतर नाजाइज़ (अवैध) फ़ायदों पर नज़र रखने लगे। उन्होंने भी विकास और सुधार के काम छोड़कर ईश्वर की दी हुई क़ुव्वतों और संसाधनों को तबाह व बरबाद करना शुरू किया और अगर इस्तेमाल किया भी तो ज़्यादातर ज़िन्दगी को बिगाड़नेवाले कामों में किया। भोग-विलास में वे इतने खो गए कि जब आख़िरी पराजय खाकर उनके शासकों को दिल्ली के लालक़िले से निकलना पड़ा तो उनके शहज़ादे (राजकुमार) वही जो कल तक हुकूमत के उम्मीदवार थे जान बचाने के लिए भाग भी न सकते थे। क्योंकि ज़मीन पर चलना उन्होंने छोड़ रखा था। मुसलमानों का आम नैतिक पतन इस हद को पहुँच गया कि उनके जनसाधारण से लेकर बड़े-बड़े ज़िम्मेदार लोग तक किसी में भी अपनी ज़ात के सिवा दूसरी किसी चीज़ की वफ़ादारी बाक़ी न रही, जो उन्हें धर्म, जाति और देश को बेचने से रोकती। उनमें हज़ारों-लाखों पेशावर सिपाही पैदा होने लगे, जिनकी अख़लाक़ी हालत पालतू कुत्तों

की-सी थी कि जो चाहे रोटी देकर उन्हें पाल ले और फिर जिसका दिल चाहे उनसे शिकार करा ले। उनमें यह एहसास भी बाक़ी न रहा कि यह अत्यन्त नीच पेशा, जिसके कारण उनके दुश्मन ख़ुद उन्हीं के हाथों उनका देश जीत रहे थे, अपने अन्दर कोई नीचता का पहलू भी रखता है। ग़ालिब जैसा व्यक्ति गर्व से कहता है—

"सौ पुश्त से है पेशा-ए-आबा सिपह गिरी।"

(सौ पीढ़ियों से हमारे बाप-दादा का पेशा सिपाहगिरी है)

यह बात कहते हुए इतने बड़े शायर को ज़रा ख़याल तक न गुज़रा कि पेशावराना सिपाहगिरी कोई गर्व की बात नहीं, डूब मरने की बात है।

जब उनकी हालत यह हो गई तो ईश्वर ने उनको हटाने का भी फ़ैसला कर लिया और भारत के प्रबन्ध का पद फिर नए उम्मीदवारों के लिए खुल गया। इस मौक़े पर चार उम्मीदवार मैदान में थे। मराठे, सिख, अंग्रेज़ और कुछ मुसलमान रईस। आप ख़ुद न्याय के साथ जातीय पक्षपात की ऐनक उतारकर उस युग के इतिहास और बाद के हालात को देखेंगे तो आपका दिल गवाही देगा कि दूसरे उम्मीदवारों में से किसी में भी बनाव की वे क्षमताएँ न थीं, जो अंग्रेज़ों में थीं। और जितना बिगाड़ अंग्रेज़ों में था उससे कहीं ज़्यादा बिगाड़ मराठों, सिखों और मुसलमान उम्मीदवारों में था। जो कुछ अंग्रेज़ों ने बनाया वह उनमें से कोई न बनाता और जो कुछ उन्होंने बिगाड़ा उससे बहुत ज़्यादा ये उम्मीदवार बिगाड़ कर रख देते। अंग्रेज़ों को तनहा देखिए तो बहुत से पहलुओं से बेशुमार बुराइयाँ आपको नज़र आएँगी, मगर दूसरों की तुलना करके

देखिए तो अपने ज़माने के प्रतिद्वंद्वियों से उनकी बुराइयाँ बहुत कम और उनकी ख़ूबियाँ बहुत निकलेंगी। यही वजह है कि ईश्वर के क़ानून ने फिर एक बार इनसानों के उस मनमाने उसूल को तोड़ दिया जो उन्होंने झूठ-मूठ गढ़ रखा है कि "हर देश खुद देशवासियों के लिए है, चाहे वे उसे बनाएँ या बिगाड़ें।" उसने इतिहास के अटल फ़ैसले से साबित किया कि नहीं, देश तो ईश्वर का है, वही यह तय करने का अधिकार रखता है कि उसका प्रबन्ध किसके हाथ में दे और किससे छीन ले। उसका फ़ैसला किसी नस्ली, जातीय, राष्ट्रीय या पैतृक अधिकार की बिना पर नहीं होता, बल्कि इस बुनियाद पर होता है कि सामूहिक हित और आम इनसानों की भलाई कौन से प्रबन्ध में है। ईश-ग्रंथ क़ुरआन कहता है—

> "कहो कि हे ईश्वर! देश के स्वामी! तू जिसको चाहता है देश देता है और जिससे चाहता है देश छीन लेता है। जिसको चाहता है इज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है रुसवा कर देता है। भलाई तेरे ही हाथ में है और तू हर चीज़ पर क़ुदरत (सामर्थ्य) रखता है।"
>
> (क़ुरआन, सूरा-3 आले-इमरान, आयत-26)

इस तरह सर्वशक्तिमान ईश्वर हज़ारों मील की दूरी से एक ऐसी जाति को ले आया जो कभी यहाँ तीन-चार लाख की संख्या से ज़्यादा नहीं रही और उसने यहीं के साधनों और यहीं के आदमियों से यहाँ के हिन्दू, मुस्लिम, सिख सब ताक़तों को पराजित करके इस देश का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। यहाँ के करोड़ों नागरिक उन मुट्ठी भर अंग्रेज़ों के अधीन बनकर रहे। एक-एक

अंग्रेज़ ने अकेले एक-एक ज़िले पर हुकूमत की, बग़ैर इसके कि उसकी जाति का कोई दूसरा व्यक्ति उसका हाथ मज़बूत करने के लिए उसके पास मौजूद होता। इस अवधि में भारतवासियों ने जो कुछ किया सेवकों की हैसियत से किया न कि शासक की हैसियत से। हम सबको यह मानना पड़ेगा, और न मानेंगे तो सच्चाई को झुठलाएँगे कि इस पूरी अवधि में, जबकि अंग्रेज़ यहाँ रहे, बनाव का जो कुछ भी काम हुआ अंग्रेज़ों के हाथों से और उनके असर से हुआ। जिस हालत में उन्होंने भारत को पाया था उसकी तुलना में आज की हालत देखिए तो आप इस बात से इनकार न कर सकेंगे कि बिगाड़ के बावजूद बनाव का बहुत-सा काम हुआ है, जिसकी खुद देशवासियों के हाथों अंजाम पाने की हरगिज़ उम्मीद न की जा सकती थी। इसलिए ईश्वर का वह फ़ैसला ग़लत न था जो उसने अट्ठारहवीं सदी के मध्य में कर दिया था।

अब देखिए कि जो कुछ अंग्रेज़ बना सकते थे वे बना चुके हैं। उनके बनाव के हिसाब में अब कोई ख़ास बढ़ोत्तरी नहीं हो सकती। इस हिसाब में जो बढ़ोत्तरी वे कर सकते हैं वह दूसरों के हाथों भी हो सकती है। मगर दूसरी तरफ़ उनके बिगाड़ का हिसाब बहुत बढ़ चुका है और जितनी मुद्दत भी वे यहाँ रहेंगे बनाव की अपेक्षा बिगाड़ ही ज़्यादा बढ़ाएँगे। उनके जुर्म की सूची इतनी लम्बी है कि उसे एक संक्षिप्त लेख में बयान करना मुश्किल है और उसके बयान की कोई ज़रूरत भी नहीं है, क्योंकि वह सबके सामने है। अब ईश्वर का फ़ैसला यही है कि यहाँ का प्रबन्ध उनके हाथों से छीन लिया जाए। उन्होंने बहुत अक़्लमन्दी से काम लिया कि खुद सीधी तरह विदा

होने के लिए तैयार हो गए। सीधी तरह न जाते तो टेढ़ी तरह निकाले जाते, क्योंकि ईश्वर के अटल नियम अब उनके हाथ में यहाँ का प्रबन्ध रखने के पक्ष में नहीं हैं।

इतिहास का यह महत्वपूर्ण अवसर

यह अवसर जिसके सिरे पर हम और आप खड़े हैं, इतिहास के उन अहम मौक़ों में से है जब ज़मीन का असली मालिक (सर्वशक्तिमान ईश्वर) किसी देश में एक प्रबन्ध को ख़त्म करता है और दूसरे प्रबन्ध का फ़ैसला करता है। देखने में जिस तरह यहाँ सत्ता का एक-दूसरे को देने का मामला तय होता नज़र आ रहा है इससे यह धोखा न खाइए कि यह आख़िरी फ़ैसला है, जो देश का प्रबन्ध खुद देशवासियों के हाथों में दिए जाने के पक्ष में हो रहा है। आप शायद मामले की सादा-सी सूरत समझते होंगे कि अजनबी लोग जो बाहर से आकर शासन कर रहे थे वापस जा रहे हैं, इसलिए अब यह आप-से-आप होना ही चाहिए कि देश का प्रबन्ध खुद देशवासियों के हाथ में आए। नहीं! ईश्वर के फ़ैसले इस तरह के नहीं होते। वह उन अजनबियों को न पहले बिला वजह के लाया था न अब बिला वजह के ले जा रहा है। न पहले अलल-टप उसने आपसे प्रबन्ध छीना था और न अब अलल-टप वह उसे आपके हवाले कर देगा। अस्ल में इस वक़्त भारत के नागरिक उम्मीदवार की हैसियत रखते हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिख सब उम्मीदवार हैं। चूँकि ये पहले से यहाँ आबाद चले आ रहे हैं इसलिए पहला मौक़ा उन्हीं को दिया जा रहा है। लेकिन यह स्थाई नियुक्ति नहीं है, बल्कि सिर्फ़ परिक्षाकाल है। अगर वास्तव में उन्होंने साबित किया कि उनके

अन्दर बिगाड़ से बढ़कर बनाव की क्षमताएँ हैं तब तो उनकी नियुक्ति स्थाई हो जाएगी। वरना अपने बनाव से बढ़कर अपना बिगाड़ पेश करके ये बहुत जल्दी देख लेंगे कि फिर इस देश का प्रबन्ध उनके हाथों से छीन लिया जाएगा और दूर व पास की जातियों में से किसी एक को इस सेवा के लिए चुन लिया जाएगा। फिर इस फ़ैसले के ख़िलाफ़ ये कोई फ़रियाद तक न कर सकेंगे। दुनिया भर के सामने अपनी अयोग्यता और नालइक़ी का खुला सुबूत दे चुकने के बाद उनका मुँह क्या होगा कि कोई फ़रियाद करें। और ढीठ बनकर फ़रियाद करेंगे भी तो इसको कौन सुनेगा।

जाइज़ा लीजिए!

अब ज़रा आप जाइज़ा लेकर देखें कि भारत के लोग—हिन्दू, मुस्लिम, सिख—इस इम्तिहान के मौक़े पर अपने ईश्वर के सामने अपनी क्या योग्यताएँ और क्षमताएँ और अपनी क्या विशेषताएँ और कारनामे पेश कर रहे हैं, जिनकी बिना पर यह उम्मीद कर सकते हों कि ईश्वर अपने देश का प्रबन्ध फिर उनके हाथों में दे देगा। इस अवसर पर अगर मैं बेलाग तरीक़े से खुल्लमखुल्ला वह अभियोग-सूची सुना दूँ जो नैतिकता की अदालत में हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों सब पर लागू होती है तो मैं उम्मीद करता हूँ कि आप बुरा न मानेंगे। अपनी जाति और अपने देश के भाइयों की बुराइयों और कमियों को बयान करके ख़ुशी तो मुझे भी नहीं होती। हक़ीक़त में मेरा दिल रोता है। मगर मैं ज़रूरी समझता हूँ कि चाहे वे ख़ुश हों या नाराज़ बहरहाल सच्ची बात उनसे कह दूँ। क्योंकि मैं मानो अपनी आँखों से उस अंजाम को देख रहा हूँ जो

इन बुराइयों और कमियों की बिना पर कल उन्हें देखना ही नहीं भुगतना भी पड़ेगा। मुझे आशंका है कि ये बुराइयाँ और कमियाँ उन्हें ले डूबेंगी। हम और आप कोई भी उनके बुरे अंजाम से न बचेगा। इसलिए मैं उन्हें दिली रंज और तकलीफ़ के साथ बयान करता हूँ, ताकि जिनके कान हों वे सुनें और सुधार की कुछ चिन्ता करें।

हमारे लोगों की आम नैतिक दशा जैसी कुछ है, आप इसका अनुमान ख़ुद अपने निजी तजरिबे, अनुभव और निरीक्षण की बिना पर कीजिए। हममें से कितने प्रतिशत आदमी ऐसे पाए जाते हैं जो किसी का हक़ व अधिकार हड़पने में, कोई नाजाइज़ फ़ायदा उठाने में, कोई "लाभकारी" झूठ बोलने और कोई "लाभप्रद" बेईमानी करने में सिर्फ़ इस कारण हिचकिचाते हों कि ऐसा करना नैतिकता की दृष्टि से बुरा है? जहाँ क़ानून पकड़ न करता हो या जहाँ क़ानून की पकड़ से बच निकलने की उम्मीद हो वहाँ कितने प्रतिशत मनुष्य केवल अपने नैतिक एहसास के कारण किसी जुर्म और किसी बुराई को करने से बचे रह जाते हैं? जहाँ अपने किसी निजी फ़ायदे की उम्मीद न हो वहाँ कितने आदमी दूसरों के साथ भलाई, हमदर्दी, त्याग तथा सहयोग और अच्छे व्यवहार का बरताव करते हैं? हमारे व्यापारियों में ऐसे कितने लोग हैं जो धोखे, फ़रेब और झूठ और नाजाइज़ नफ़ा जमा करने से बचते हों? हमारे उद्योगपतियों में ऐसे लोगों का अनुपात क्या है जो अपने फ़ायदे के साथ कुछ अपने ख़रीदारों के फ़ायदे और अपनी जाति और अपने देश की भलाई का भी ख़याल रखते हों? हमारे ज़मींदारों में कितने ऐसे हैं जो अनाज

रोकते हुए और बहुत ज़्यादा महँगे दामों पर बेचते हुए यह सोचते हों कि अपने इस नफ़ा जमा करने से वे कितने लाख, बल्कि कितने करोड़ इनसानों को भुखमरी की सज़ा दे रहे हैं? हमारे मालदारों में कितने हैं जिनकी दौलत में किसी अत्याचार, किसी बेईमानी, किसी बददियानती और हक़तल्फ़ी (अधिकार-हनन) का दख़ल (हाथ) नहीं है? हमारे मज़दूरों में कितने हैं जो अपनी ज़िम्मेदारी को समझते हुए अपनी मज़दूरी और अपनी तनख़ाह (वेतन) का हक़ अदा करते हैं? हमारे सरकारी कर्मचारियों में कितने हैं जो रिश्वत और घोटाले से ज़ुल्म और लोगों को तकलीफ़ पहुँचाने से, कामचोरी और हरामख़ोरी से, और अपने अधिकारों के अनुचित इस्तेमाल से बचे हुए हैं? हमारे वकीलों में, हमारे डॉक्टरों और हकीमों और वैद्यों में, हमारे पत्रकारों में, हमारे प्रकाशकों और लेखकों में, हमारे 'राष्ट्र-सेवकों' में कितने हैं, जो अपने फ़ायदे के लिए अपवित्र तरीक़े अपनाने और ईश्वर के बन्दों को मानसिक, नैतिक, माली (आर्थिक) और जिस्मानी नुक़सान पहुँचाने में कुछ भी शर्म महसूस करते हों? शायद मेरा अनुमान ठीक ही हो अगर यह कहूँ कि हमारी आबादी में मुश्किल से पाँच प्रतिशत लोग इस नैतिक रोग से बचे रह गए हैं, वरना 95 प्रतिशत को यह रोग बुरी तरह लग चुका है। इस मामले में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई और दलित के बीच कोई अन्तर नहीं। सब-के-सब बीमार हैं, सबकी नैतिक हालत अत्यन्त भयावह सीमा तक गिरी हुई है और किसी गरोह (वर्ग) का हाल दूसरे से अच्छा नहीं है।

नैतिक गिरावट की यह वबा और महामारी जब लोगों की एक

बहुत बड़ी तादाद को अपनी लपेट में ले चुकी तो स्वाभाविक बात थी कि बड़े पैमाने पर सामूहिक शक्ल में इसका प्रदर्शन शुरू हो जाए। इस आनेवाले तूफ़ान की पहली निशानी हमें उस वक़्त नज़र आई जब लड़ाई की वजह से रेलों में मुसाफ़िरों की भीड़ होने लगी। वहाँ एक ही जाति, राष्ट्र और एक ही देश के लोगों ने आपस में एक-दूसरे के साथ जिस ख़ुदग़र्ज़ी, बेदर्दी और पत्थरदिली का सुलूक किया वह पता दे रहा था कि हमारी आम नैतिकता किस तेज़-रफ़्तारी के साथ गिर रही है। फिर चीज़ों की कमी और महंगाई के साथ जमाखोरी और चोर-बाज़ारी बहुत बड़े पैमाने पर शुरू हुई। फिर बंगाल का वह भयानक कृत्रिम अकाल पड़ा, जिसमें हमारे एक वर्ग ने अपने ही देश के लाखों इनसानों को अपने फ़ायदे की ख़ातिर भूख से तड़पा-तड़पाकर मार डाला। ये सब शुरुआती निशानियाँ थीं। इसके बाद कमीनापन, दरिन्दगी और डर और आतंक का वह लावा याकायक फूट पड़ा जो हमारे अन्दर मुद्दतों से पक रहा था और अब वह साम्प्रदायिक दंगों की शक्ल में भारत को एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक भस्म कर रहा है। कलकत्ता के दंगे के बाद से हिन्दुओं, मुसलमानों और सिखों की जातीय संघर्ष का जो नया अध्याय शुरू हुआ है उसमें ये तीनों जातियाँ अपने अत्यन्त घटिया अवगुणों का प्रदर्शन कर रही है। जिन कामों की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी कि कोई इनसान कभी ऐसा भी कर सकता है, आज हमारी बस्तियों के रहनेवाले खुल्लमखुला इनको कर रहे हैं। बड़े-बड़े इलाक़ों की पूरी-पूरी आबादियाँ गुन्डा बन गई हैं और ऐसे काम कर रही हैं जो किसी गुन्डे के स्वप्न व ख़याल में भी न आए

थे। दूध पीते बच्चों को माओं के सीनों पर रखकर क़त्ल किया गया है। ज़िन्दा इनसानों को आग में भूना गया है। शरीफ़ औरतों को सरे-आम नंगा किया गया है और हज़ारों की भीड़ में उनके साथ दुष्कर्म किया गया है। बापों, भाइयों और पतियों के सामने उनकी बेटियों, बहनों और पत्नियों को बेइज़्ज़त किया गया है। इबादतगाहों (पूजा-स्थलों) और धार्मिक किताबों पर गुस्सा निकालने की अत्यन्त गन्दी शक्लें अपनाई गई हैं। बीमारों और ज़ख़्मियों और बूढ़ों को अत्यन्त बेरहमी और निर्दयता के साथ मारा गया है। मुसाफ़िरों को चलती ट्रेन पर से फेंका गया है। ज़िन्दा इनसानों के अंग काटे गए हैं। निहत्थे और निर्दोष और बेबस इनसानों का जानवरों की तरह शिकार किया गया है। पड़ोसियों ने पड़ोसियों को लूटा है। दोस्तों ने दोस्तों को धोखा दिया है। पनाह देनेवालों ने ख़ुद अपनी दी हुई पनाह को तोड़ा है। अम्न व शान्ति के रखवालों (पुलिस और फ़ौज और मजिस्ट्रेटों) ने खुल्लमखुल्ला फ़साद व दंगों में हिस्सा लिया है, बल्कि ख़ुद फ़साद किया और अपनी हिमायत व निगरानी में फ़साद कराया है। मतलब यह कि ज़ुल्म व अत्याचार, पत्थरदिली व बेरहमी और कमीनगी व बदमाशी की कोई क़िस्म ऐसी नहीं रह गई है, जिसको इन कुछ महीनों में हमारे देशवासियों ने सामूहिक रूप से अंजाम न दिया हो। और अभी दिलों का मैल पूरी तरह निकला नहीं है। लक्षण बता रहे हैं कि जो कुछ हो चुका है इससे बहुत ज़्यादा बड़े पैमाने पर और कहीं अधिक बुरी हालत में अभी होनेवाला है।

क्या आप समझते हैं कि यह सब कुछ केवल किसी आकस्मिक (अचानक) उत्तेजना का नतीजा है? अगर यह आपका गुमान है तो

आप सख़्त ग़लतफ़हमी में पड़े हुए हैं। अभी मैं आपको बता चुका हूँ कि इस देश की आबादी के 95 प्रतिशत लोग अख़लाक़ी (नैतिक) हैसियत से बीमार हो चुके हैं। जब लोगों की इतनी बड़ी तादाद बदअख़लाक़ और भ्रष्ट हो जाए तो जातियों का सामूहिक रवैया और आचरण आख़िर कैसे ठीक रह सकता है। यही वजह है कि हिन्दू, मुस्लिम और सिख तीनों समुदायों में सच्चाई, न्याय और सत्यवादिता का कोई महत्व बाक़ी नहीं रहा है। सच्चे, ईमानदार और सज्जन इनसान इनके अन्दर नक्कू बनकर रह गए हैं। बुराई से रोकना और भलाई का उपदेश करना उनकी सोसाइटी में एक असहनीय अपराध हो गया है। सत्य और न्याय की बात सुनने के लिए वे तैयार नहीं हैं। इनमें से हर एक समुदाय को वही लोग पसन्द हैं जो उसकी हद से बढ़ी हुई ख़ाहिशों और इच्छाओं की वकालत करें, दूसरों के ख़िलाफ़ उनके पक्षपातों को भड़काएँ और उसके सही व ग़लत उद्देश्यों के लिए लड़ने को तैयार हों। इसी बिना पर उन समुदायों ने छाँट-छाँटकर अपने अन्दर से सबसे बुरे आदमियों को चुना और उन्हें अपना प्रतिनिधि बनाया। उन्होंने अपने बड़े अपराधियों को ढूँढ़-ढूँढ़कर निकाला और उन्हें अपना प्रतिनिधि और नेता बना लिया। उनकी सोसाइटी में जो लोग सबसे ज़्यादा गिरे हुए अख़लाक़ और आचरण वाले, बेज़मीर (अन्तरात्मा रहित) और बे-उसूल थे वे उनकी तर्जुमानी के लिए उठे और अख़बार लिखने के मैदान में वही सबसे बढ़कर लोकप्रिय हुए। फिर ये सब लोग बिगाड़ की राह पर अपने-अपने बिगड़े हुए समुदायों को सरपट लेकर चले। उन्होंने विरोधाभासी और परस्पर विरोधी जातीय

इच्छाओं को किसी न्याय के बिन्दु पर जमा करने के बजाय इतना बढ़ा दिया कि वे आख़िरकार टकराव के बिन्दु पर पहुँच गईं। उन्होंने आर्थिक व राजनीतिक उद्देश्यों की कश्मकश में गुस्से और नफ़रत और दुश्मनी का ज़हर मिलाया और उसे दिन-प्रतिदिन बढ़ाते चले गए। उन्होंने बरसों अपनी अधीन जातियों को भड़काऊ भाषणों और लेखों के इंजेक्शन दे-देकर यहाँ तक भड़काया कि वे जोश में आकर कुत्तों और भेड़ियों की तरह लड़ने खड़ी हो गईं। उन्होंने जनसाधारण और प्रमुख व्यक्तियों के दिलों को अपवित्र भावनाओं की संडास और अँधी दुश्मनी की भट्टी बनाकर रख दिया। अब जो तूफ़ान आपकी निगाहों के सामने उठा है यह कोई वक़्ती और हंगामी चीज़ नहीं है, जो अचानक ज़ाहिर हो गई हो। यह तो स्वभाविक परिणाम है बिगाड़ के उन बेशुमार कारणों का जो मुद्दतों से हमारे अन्दर काम कर रहे थे। और यह बुरा परिणाम बस एक ही बार सामने आकर नहीं रह जाएगा, बल्कि जब तक वे कारण अपना काम किए जा रहे हैं यह दिन-प्रतिदिन तरक़्क़ी के साथ ज़ाहिर होता चला जाएगा। यह एक विषैली फ़स्ल है, जो बरसों के बीज बोने व सिंचाई के बाद अब पककर तैयार हुई है और इसे आपको और आपकी नस्लों को न मालूम कब तक काटना पड़ेगा।

तनिक सोचें!

भाइयो! आप ठण्डे दिल से सोचें कि ठीक उस वक़्त जबकि क़ुदरत के क़ानून के अनुसार इस देश के भाग्य का नया प्रबन्ध होना है, हम ज़मीन के स्वामी (परमेश्वर) के सामने अपनी योग्यता

व क़ाबिलियत का क्या सुबूत पेश कर रहे हैं। मौक़ा तो यह था कि हम अपने तौर-तरीक़ों से यह सिद्ध करते कि अगर वह अपनी ज़मीन का प्रबन्ध हमारे सिपुर्द करेगा तो हम उसे ख़ूब बना-सँवारकर सुन्दर वाटिका बना देंगे। हम उसमें न्याय स्थापित करेंगे। उसे एक-दूसरे की हमदर्दी, मदद और रहमत (दया) का घर बनाएँगे। इसके साधनों को अपनी और इनसानियत की कामयाबी और भलाई में इस्तेमाल करेंगे। इसमें भलाइयों को बढ़ाएँगे-फैलाएँगे और बुराइयों को दबाएँगे। लेकिन हम धरती के स्वामी ईश्वर को बता रहे हैं कि हम ऐसे विनाशकारी, इतने फ़सादी और इतने ज़ालिम हैं कि अगर तूने यह ज़मीन हमारे हवाले की तो हम इसकी बस्तियों को उजाड़ देंगे, मुहल्ले-के-मुहल्ले और गाँव-के-गाँव फूँक देंगे, इनसानी जान को मक्खी और मच्छर से ज़्यादा बे-क़ीमत कर देंगे, औरतों को बेइज़्ज़त करेंगे, छोटे बच्चों का शिकार करेंगे, बूढ़ों, बीमारों और ज़ख़्मियों पर भी दया न करेंगे, पूजा-स्थलों और धार्मिक किताबों तक को अपनी मन की गन्दगी से लेस देंगे, और जिस ज़मीन को तूने इनसानों से आबाद किया है उसकी शोभा हम लाशों और जली हुई इमारतों से बढ़ाएँगे। क्या वास्तव में आपका दिल यह गवाही देता है कि अपनी ये सेवाएँ, ये विशेषताएँ और ये कारनामे पेश करके आप ईश्वर की निगाह में उसकी ज़मीन के प्रबन्ध के लिए सबसे योग्य सेवक समझे जाएँगे? क्या ये करतूत देखकर धरती का स्वामी आपसे कहेगा कि "शाबाश!" ऐ मेरे पुराने मालियों की औलाद! तुम ही सबसे बढ़कर मेरे इस बाग़ की रखवाली के योग्य हो। इसी उखेड़-पछाड़, इसी उजाड़ और बिगाड़,

इसी तबाही व बरबादी और गन्दगी के लिए तो मैंने यह बाग़ लगाया था। लो अब इसे अपने हाथ में लेकर ख़ूब ख़राब करो।

मेरा उद्देश्य

मैं ये बातें आपसे इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि आप अपने आपसे और अपने देश के भविष्य से निराश हो जाएँ। मैं न तो खुद निराश हूँ, न किसी को निराश करना चाहता हूँ। अस्ल में मेरा उद्देश्य आपको यह बताना है कि भारत के लोग अपनी बेवक़ूफ़ी और नादानी से उस क़ीमती मौक़े को खोने पर तुले हुए हैं जो किसी देश की क़िस्मत बदलते समय सदियों के बाद सारे संसार का स्वामी ईश्वर उसके नागरिकों को दिया करता है। यह वक़्त था कि वे एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर अपने उच्च गुणों और अपनी बेहतर योग्यताओं और सलाहियतों का सुबूत पेश करते, ताकि ईश्वर की निगाह में ज़मीन के प्रबन्ध के योग्य ठहरते। मगर आज इनके दरमियान मुक़ाबला इस चीज़ में हो रहा है कि कौन ज़्यादा विनाशकारी, ज़्यादा अत्याचारी और ज़्यादा अन्यायी है, ताकि सबसे बढ़कर ईश्वर के प्रकोप का वही पात्र ठहरे। यह निशानी आज़ादी और तरक़्क़ी और कामयाबी की नहीं है। इनसे तो अन्देशा है कि कहीं फिर एक लम्बे समय के लिए हमारे लिए ग़ुलामी और रुसवाई का फ़ैसला न लिख दिया जाए। इसलिए जो लोग अक़्ल व होश रखते हैं उन्हें इन हालात के सुधार के लिए कुछ चिन्ता करनी चाहिए।

सुधार की सूरत!

इस स्थान पर आपके दिल में यह प्रश्न खुद-ब-खुद पैदा होगा कि सुधार की सूरत क्या है?

मैं इसका जवाब देने के लिए उपस्थित हूँ। इस अंधेरे में हमारे लिए उम्मीद की एक ही किरण है और वह यह है कि हमारी पूरी आबादी बिगड़कर नहीं रह गई है, बल्कि इसमें कम-से-कम चार-पाँच प्रतिशत लोग ऐसे ज़रूर मौजूद हैं जो इस सर्वव्यापी बिगाड़ से बचे हुए हैं। यह वह दौलत है जिसको सुधार की शुरुआत करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। सुधार की राह में पहला क़दम यह है कि इन पवित्र और भले लोगों को छाँटकर संगठित किया जाए। हमारे दुर्भाग्य की वजह यही है कि हमारे यहाँ बुराई तो संगठित है और विधिपूर्वक अपना काम कर रही है, लेकिन भलाई संगठित नहीं है। भले लोग मौजूद ज़रूर हैं, मगर बिखरे हुए हैं। उनके अन्दर कोई सम्पर्क और ताल्लुक़ नहीं है। परस्पर सहयोग नहीं है। कोई कार्यक्रम और कोई संयुक्त आवाज़ नहीं है। इसी चीज़ ने उनको बिलकुल बेअसर और प्रभावहीन बना दिया है। कभी कोई ईश्वर का भक्त (बन्दा) अपने आस-पास की बुराइयों को देखकर चीख़ उठता है, मगर जब किसी तरफ़ से कोई आवाज़ उसकी हिमायत में नहीं उठती तो निराश होकर बैठ जाता है। कभी कोई व्यक्ति सत्य और न्याय की बात खुल्लमखुल्ला कह बैठता है, मगर संगठित बुराई ज़बरदस्ती उसका मुँह बन्द कर देती है और न्यायप्रिय लोग बस अपनी जगह चुपके से उसकी प्रशंसा करके रह जाते हैं। कभी कोई व्यक्ति इनसानियत का ख़ून होते देखकर चुप नहीं रह सकता

और इसपर चिल्ला उठता है, मगर ज़ालिम लोग भीड़ करके उसे दबा लेते हैं और उसका परिणाम देखकर बहुत से उन लोगों की हिम्मतें पस्त हो जाती हैं जिनकी अन्तरात्मा में अभी कुछ ज़िन्दगी बाक़ी है। यह हालत अब ख़त्म होनी चाहिए। अगर हम यह नहीं चाहते कि हमारा देश ईश्वर के प्रकोप का शिकार हो और इस प्रकोप में अच्छे और बुरे सब गिरफ़्तार हो जाएँ तो हमें कोशिश करनी चाहिए कि हमारे अन्दर जो अच्छे और पवित्र लोग इस नैतिक पतन से बचे रह गए हैं वे अब इकट्ठा और संगठित हों और सामूहिक शक्ति से इस बढ़ते हुए बिगाड़ का मुक़ाबला करें, जो तेज़ी के साथ हमें तबाही व बरबादी की तरफ़ लिए जा रहा है।

आप इससे न घबराएँ कि यह नेक और भले लोग इस समय देखने में बहुत ही निराशाजनक कम संख्या में हैं। ये थोड़े से लोग यदि संगठित हो जाएँ, यदि इनका अपना निजी या सामूहिक व्यवहार सत्य, न्याय, सत्य-प्रियता, निष्ठा एवं ईमानदारी पर पूरे तौर पर आधारित हो और यदि वे जीवन की समस्याओं का उत्तम समाधान और दुनिया के मामलों को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक अच्छा प्रोग्राम भी रखते हों तो विश्वास रखिए कि इस संगठित भलाई के सामने संगठित बुराई अपने पूरे लाव-लश्कर के बाहुल्य और अपने अपवित्र हथियारों की तेज़ी के बावजूद परास्त होकर रहेगी। मानव-प्रकृति बुराई को पसन्द नहीं करती है। उसे धोखा अवश्य दिया जा सकता है और एक बड़ी हद तक बिगाड़ा भी जा सकता है, किन्तु इसके भीतर भलाई के महत्व का जो अंश ईश्वर ने रख दिया है उसे बिलकुल नष्ट नहीं किया जा सकता। इनसानों

में ऐसे लोग थोड़े ही होते हैं जो बुराई ही से प्रेम रखते हों और उसी के फैलाने के लिए उठ खड़े हों और ऐसे लोग भी कम ही होते हैं जिन्हें भलाई से प्रेम इस हद तक बढ़ गया हो कि उसे फैलाने के लिए तन, मन, धन की बाज़ी लगा दें। इन दोनों समूहों के बीच सर्वसाधारण मनुष्य भलाई और बुराई की मिली-जुली प्रवृत्ति रखते हैं। वे न बुराई पर मोहित होते हैं और न भलाई ही से उन्हें असाधारण लगाव होता है। उनका किसी ओर झुक जाना केवल इस पर निर्भर होता है कि भलाई और बुराई, सत्य और असत्य, नेकी और बदी के प्रचारकों में कौन आगे बढ़कर उन्हें अपने रास्ते की ओर खींचता है। यदि भलाई के प्रचारक सिरे से मैदान में आएँ ही नहीं और उनकी ओर से जनसाधारण को भलाई की राह पर चलाने का कोई प्रयत्न ही न हो तो पाप के प्रचारक ही मैदान जीतेंगे और वे जनसाधारण को अपनी राह पर खींच ले जाएँगे। किन्तु यदि भलाई के प्रचारक भी मैदान में मौजूद हों और वे सुधार का उचित प्रयत्न करें तो जनसाधारण पर बुराई के प्रचारकों का प्रभाव अधिक समय तक बाक़ी नहीं रह सकता, क्योंकि इन दोनों का मुक़ाबला अन्ततः नैतिकता के क्षेत्र में होगा, और इस क्षेत्र में भले आदमियों को बुरे आदमी कभी परास्त नहीं कर सकते। सत्य के सामने झूठ, ईमानदारी के सामने बेईमानी और सदाचार के मुक़ाबले में दुराचार चाहे कितना ही ज़ोर लगाए अन्तिम विजय बहरहाल सच्चाई, ईमानदारी तथा सदाचार की ही होगी। दुनिया इतनी असंवेदनशील (बेहिस) नहीं है कि अच्छे आचरण की मिठास और बुरे आचरण की कड़ुवाहट चख लेने के बाद अन्त में उसका निर्णय यही हो कि

मिठास से कड़ुवाहट उत्तम है।

सुधार के लिए भले इनसानों के संगठन के साथ दूसरी ज़रूरी चीज़ यह है कि हमारे सामने बनाव और बिगाड़ की एक स्पष्ट परिकल्पना मौजूद हो। हम अच्छी तरह यह समझ लें कि बिगाड़ क्या है, ताकि उसे दूर करने की कोशिश की जाए और बनाव क्या है, ताकि उसे व्यवहार में लाने पर सारा ज़ोर लगा दिया जाए। विस्तार में जाने का इस वक़्त मौक़ा नहीं है। मैं बहुत ही संक्षिप्त रूप में आपके सामने उन दोनों चीज़ों की एक रूप-रेखा पेश करूँगा।

इनसानी ज़िन्दगी में बिगाड़ जिन चीज़ों से पैदा होता है उनको हम चार बड़े-बड़े शीर्षकों के तहत जमा कर सकते हैं—

(1) **ईश्वर से निर्भय होना :** जो दुनिया में अन्याय, क्रूरता, निर्दयता, बेईमानी और सारी नैतिक बुराइयों की जड़ है।

(2) **ईश्वर के मार्गदर्शन से बेपरवाही :** जिसने इनसान के लिए किसी मामले में भी ऐसे स्थाई नैतिक उसूल बाक़ी नहीं रहने दिए हैं जिनकी पाबन्दी की जाए। इसी चीज़ के कारण व्यक्तियों, गरोहों और राष्ट्रों एवं जातियों का सारा रवैया स्वार्थ-पूजा, स्वाद-पूजा और ख़ाहिशों एवं इच्छाओं की दासता पर निर्धारित हो गया है। इसी का नतीजा है कि वे न अपने उद्देश्यों में उचित व अनुचित का अन्तर करते हैं और न ही उन उद्देश्यों को हासिल करने के लिए किसी क़िस्म के बुरे-से-बुरे ज़रिओं और साधनों को इख़्तियार करने में उन्हें ज़रा-सी हिचकिचाहट महसूस होती है।

(3) **स्वार्थ-पूजा :** जो सिर्फ़ व्यक्तियों ही को एक-दूसरे का हक़ व अधिकार हड़पने पर नहीं उभारती, बल्कि बड़े पैमाने पर जातिवाद, क़ौमी और वर्गीय भेद-भाव का रूप धारण कर लेती है और इससे बिगाड़ व फ़साद के अनगिनत रूप जन्म लेते हैं।

(4) **निष्क्रियता, जड़ता या पथभ्रष्टता :** जिसकी वजह से इनसान या तो ईश्वर की दी हुई क़ुव्वतों और सलाहियतों को इस्तेमाल ही नहीं करता, या ग़लत इस्तेमाल करता है। या तो ईश्वर के दिए हुए साधनों से काम नहीं लेता, या ग़लत काम लेता है। पहली सूरत में परमेश्वर का क़ानून यह है कि वह काहिल और निकम्मे लोगों को ज़्यादा देर तक अपनी ज़मीन पर क़ब्ज़ा जमाए नहीं रहने देता, बल्कि उनकी जगह ऐसे लोगों को ले आता है जो कुछ-न-कुछ बनानेवाले हों। दूसरी सूरत में जब ग़लत काम करनेवाली जातियों की तबाही व बरबादी उनके निर्माण कार्यों से बढ़ जाती है तो वे हटाकर फेंक दी जाती हैं और कभी ख़ुद अपने ही विनाशकारी कामों का लुक़्मा (ग्रास) बना दी जाती हैं।

इसके मुक़ाबले में वे चीज़ें भी जिनकी वजह से इनसानी ज़िन्दगी बनती और सँवरती है, चार ही शिर्षकों के तहत निर्धारित होती हैं—

1. **ईश्वर का भय :** जो आदमी को बुराइयों से रोकने और सीधा चलाने के लिए एक ही विश्वसनीय गारन्टी है। सच्चाई, न्याय, अमानत, सत्य की पहचान, नफ़्स (मन) को क़ाबू में रखना और वे तमाम ख़ूबियाँ जिनपर एक शान्तिपूर्ण और उन्नतिशील

सभ्यता व संस्कृति के जन्म का दारोमदार है, इसी एक बीज से पैदा होती हैं। हालाँकि कुछ दूसरी आस्थाओं एवं धारणाओं के ज़रिए से भी किसी-न-किसी हद तक उन्हें पैदा किया जा सकता है, जिस तरह पाश्चात्य जातियों ने कुछ-न-कुछ अपने अन्दर पैदा किया है। लेकिन उन साधनों से पैदा किए हुए गुणों का विकास बस एक हद पर जाकर रुक जाता है और इस हद के अन्दर भी उनकी बुनियाद लड़खड़ाती ही रहती है। सिर्फ़ ईश्वर का भय ही वह मज़बूत बुनियाद है, जिसपर इनसान के अन्दर बुराई से रुकने और भलाई पर चलने की ख़ूबी मज़बूती से क़ाइम होती है और सीमित पैमाने पर नहीं, बल्कि निहायत बड़े पैमाने पर तमाम इनसानी मामलों में अपना प्रभाव दिखाती है।

2. **ईश्वरीय मार्गदर्शन का अनुपालन :** जो इनसान के व्यक्तिक, सामूहिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय रवैये को नैतिकता के स्थाई नियमों का पाबन्द करने की एक ही सूरत है। जब तक इनसान अपने नैतिक नियमों का स्वयं निर्माता और बनानेवाला रहता है उसके पास बातें बनाने के लिए कुछ और उसूल और नियम होते हैं और व्यवहार में लाने के लिए कुछ और। किताबों में सोने के पानी से वह एक क़िस्म के उसूल लिखता है और मामलों में अपने मतलब के अनुसार बिलकुल दूसरी ही क़िस्म के उसूल बरतता है। दूसरों से माँग करते समय उसके नियम कुछ होते हैं और ख़ुद मामला करते वक़्त कुछ। मौक़ा और मसलिहत और ख़ाहिश और ज़रूरत के दबाव से उसके उसूल

हर वक़्त बदलते हैं। वह नैतिकता का मूल केन्द्र "सत्य" को नहीं, बल्कि "अपने स्वार्थ व हित" को बनाता है। वह इस बात को मानता ही नहीं कि इसके कर्म को सत्य के अनुसार ढलना चाहिए। इसके बजाय वह चाहता है कि सत्य उसके हितों के मुताबिक़ ढले। यही वह चीज़ है जिसके कारण व्यक्ति से लेकर गरोहों और राष्ट्रों तक सबका रवैया ग़लत हो जाता है और इसी से दुनिया में फ़साद व बिगाड़ फैलता है। इसके विपरीत जो चीज़ इनसान को अम्न व शान्ति, ख़ुशहाली, कामयाबी और सौभाग्य प्रदान कर सकती है वह यह है कि नैतिकता के कुछ ऐसे उसूल हों जो किसी के फ़ायदे की दृष्टि से नहीं, बल्कि सत्य की दृष्टि से बने हुए हों और उन्हें अटल मानकर तमाम मामलों में उनकी पाबन्दी की जाए, चाहे वे मामले निजी हों या राष्ट्रीय, चाहे वे कारोबार से ताल्लुक़ रखते हों या राजनीति और संधि व युद्ध से। ज़ाहिर है कि ऐसे नियम केवल ईश्वरीय मार्गदर्शन ही में हमें मिल सकते हैं और उनको व्यवहार में लाने की सिर्फ़ यही एक सूरत है कि इनसान उनके अन्दर फेर-बदल करने के अधिकार से अलग होकर उन्हें अपनाने को ज़रूरी समझ ले।

3. **मानव-व्यवस्था :** जो व्यक्तिगत, राष्ट्रीय, वंशगत और वर्गीय स्वार्थों एवं हितों के बजाय तमाम इनसानों के बराबर दर्जे और बराबरी के अधिकार पर आधारित हो। जिसमें अनुचित भेदभाव न हों। जिसमें ऊँच-नीच, छूत-छात और बनावटी पक्षपात न हों, जिसमें कुछ लोगों के लिए विशेष अधिकार और कुछ लोगों

के लिए बनावटी पाबन्दियाँ और रुकावटें न हों, जिसमें सबको बराबर फूलने-फलने का अवसर मिले, जिसमें इतनी व्यापकता हो कि पूरी ज़मीन के तमाम इनसान इसमें बराबरी के साथ शामिल हो सकते हों।

4. **उचित व्यवहार :** यानी ईश्वर की दी हुई शक्तियों और उसके दिए हुए साधनों को पूरी तरह इस्तेमाल करना और सही इस्तेमाल करना।

भाइयो! ये चार चीज़ें हैं जिनके समूह का नाम 'बनाव' और 'सुधार' है और हम सबकी बेहतरी व भलाई इसमें है कि हमारे अन्दर नेक और अच्छे इनसानों का एक ऐसा संगठन मौजूद हो जो बिगाड़ के असबाब (कारणों) को रोकने और बनाव की इन सूरतों को व्यवहार में लाने के लिए लगातार कोशिश और जिद्दो-जुहद करे। यह जिद्दो-जुहद और कोशिश इस देश के बाशिंदों को सच्चे और सीधे रास्ते पर लाने में कामयाब हो गई तो ईश्वर ऐसा अन्यायी नहीं है कि वह अकारण अपनी ज़मीन का प्रबन्ध उसके असली नागरिकों से छीनकर किसी और को दे दे। लेकिन अगर ईश्वर न करे! यह कोशिश अगर नाकाम हुई तो हम नहीं कह सकते कि हमारा, आपका और इस धरती के रहनेवालों का क्या परिणाम होगा!

—:—